



दूसरी झलक

गांधी की लंदन-यात्रा

समुद्र की लहराती लहरों पर उछलता-कूदता जहाज आगे की ओर बढ़ रहा था; पर मोहन का मन पीछे की ओर भाग रहा था। माँ की भीगी आँखें और पत्नी का मौन रुदन उसे बहुत व्याकुल बना रहा था। प्यारा घर, प्यारा देश दूर होता जा रहा था।

जहाज में उनके परिचित, राजकोट के वकील मजूमदार थे। शेष यात्री अँग्रेज थे, जिनसे मिलने और बात करने में गांधी सकुचाते थे। उन्होंने लिखा है, "मैं स्टुअर्ट (भोजन परोसने वाले) से बोलते हुए झेंपता था; क्योंकि मेरी अँग्रेजी कमजोर थी, साथ ही मैं अँग्रेजी रीति-रिवाज से भी परिचित नहीं था।" गांधी यह समझ नहीं पाते थे कि स्टुअर्ट से कैसे पूछें कि भोजन के पदार्थों में कौन-सी चीजें बिना मांस की हैं। छुरी-काँटे से खाने का अभ्यास न होने के कारण भोजन की टेबल पर कभी नहीं गए, अपने केबिन में ही खा लेते थे।

गांधी प्रातः जल्दी उठते और 8 बजे तक स्नानादि से निपट जाते थे। भोजन का समय होने पर वे घर से लाई हुई चीजों से अपनी भूख मिटा लेते थे। यात्री दोपहर का समय मनोरंजन में बिताते थे। गांधी कभी-कभी प्यानो बजाकर अपना मन बहला लेते थे। उनके साथी मजूमदार तो जहाज के यात्रियों से खूब हिल-मिल गए थे, पर गांधी संकोच के कारण अपने केबिन में ही लेटे रहते थे। मजूमदार बार-बार उनसे कहते, "वकील को बातूनी होना चाहिए। तुम यात्रियों से मिला-जुला करो और बातें किया करो। अँग्रेजी में यदि भूल हो जाए तो उसकी चिंता नहीं करनी चाहिए। वह हमारी मातृभाषा नहीं है, इसलिए उसे बोलने



का अभ्यास बढ़ाकर ही सीखा जा सकता है।" मजूमदार के उपदेशों का गांधी पर बहुत प्रभाव नहीं पड़ा। उनका संकोच नहीं टूटा। परन्तु गांधी को यात्रा में आनंद आ रहा था। रात को वे डेक (जहाज की छत) पर चले जाते थे; क्योंकि रात का दृश्य उन्हें बहुत भाता था। नीचे नीला पानी, ऊपर टिमटिमाते तारोंभरा नीला आकाश; समुद्र की लहरों पर चन्द्रमा का नर्तन युवक गांधी को भाव विभोर बना देता था।

पाँच दिन की यात्रा के बाद जब जहाज लंदन पहुँचा, तब पृथ्वी के दर्शन के लिए लालायित यात्री प्रफुल्लित हो उठे। धरती का प्राणी धरती से बहुत दूर रहकर सुखी नहीं रह सकता।

लाल सागर में जहाज पहुँचा तो गर्मी की तपन से यात्री बेचैन होने लगे; उन्हें चैन तभी मिलता, जब वे डेक पर जाते थे। ठंडी हवा उनमें स्फूर्ति भर देती।

स्वेज नहर में जब जहाज ने प्रवेश किया, तब जहाज के आगे की बिजली का प्रकाश चाँदनी जैसा सुन्दर लगता था। सँकरी नहर में जहाज इतनी धीमी गति से चल रहा था कि

उसका भान भी नहीं होता था। उसके छोर पर पोर्ट सईद बंदरगाह था, जहाँ जहाज रुका। माल्टा, जिब्राल्टर होता हुआ जहाज प्लेमाउथ पहुँचा। अब शीत का जोर बढ़ने लगा। जहाज के एक यात्री ने गांधी से थोड़ी-सी घनिष्टता बढ़ाते हुए सलाह दी—“मित्र, तुम्हें मांस खाना चाहिए; क्योंकि शीत प्रधान देशों में बिना मांस खाए मनुष्य स्वस्थ नहीं रह सकता।” गांधी ने कहा, “मैंने तो सुना है, इंग्लैण्ड में बहुत से शाकाहारी हैं।”

यात्री ने कहा— “झूठ है, मेरे परिचितों में तो कोई भी ऐसा नहीं है, जो मांसाहारी नहीं है; तुम चाहो तो शराब न पियो, पर मांस तो तुम्हें खाना ही चाहिए।”

गांधी ने अपने अँग्रेज सहयात्री को धन्यवाद देते हुए कहा, “मैं माँ से मांस न खाने के लिए प्रतिज्ञाबद्ध हूँ। यदि मैं देखूँगा कि बिना मांस खाए इंग्लैण्ड में नहीं रह सकता तो स्वदेश लौट जाऊँगा।”

लंदन में गांधी

जहाज साउथ हेक्टन बंदरगाह पर ठहर गया। गांधी जहाज में तो काला सूट पहनते थे, परन्तु उतरते समय उन्होंने सफेद फलालेन के वस्त्र पहन लिए। इस श्वेत पोशाक में केवल वे ही दिखलाई दे रहे थे जो असामयिक लगती थी। उनके पास डॉ. प्राण जीवन मेहता, दलपतराम, रणजीत सिंह और दादाभाई नौरोजी के नाम के परिचय पत्र थे। जहाज से उतरकर वे अपने सहयात्री मजूमदार के साथ विक्टोरिया होटल में ठहर गए। डॉ. मेहता को उनके आने की सूचना मिल गई थी। अतः वे होटल में आकर उनसे मिले और उन्हें अँग्रेजी शिष्टाचार की शिक्षा दी। उन्होंने समझाया, अँग्रेजों से धीरे-धीरे बातें करनी चाहिए। उन्हें भारत की प्रथा के अनुसार ‘सर’ नहीं कहना चाहिए क्योंकि इंग्लैण्ड में नौकर अपने मालिक को ‘सर’ कहता है।” उन्होंने गांधी को होटल त्याग, किसी परिवार के साथ रहने की सलाह दी क्योंकि होटल का खर्च बहुत भारी होता है।

डॉ. मेहता की सलाह से गांधी ने दो कमरे किराए पर ले लिए और उनमें रहने लगे रहने की समस्या तो हल हो गई, पर मन नहीं लग रहा था। दिन तो किसी प्रकार कट जाता, पर रात रोते-रोते बीतती। नींद नहीं आती थी। आती थी तो माँ की याद और घर की एक-एक बात। अपनी इस अवस्था का वर्णन करते हुए उन्होंने लिखा है— “मेरी गति साँप-छछूँदर जैसी हो गई थी। मुझे यहाँ अच्छा नहीं लग रहा था, लेकिन मैं घर भी नहीं लौट सकता था। भगवान, तीन वर्ष कैसे बिताऊँगा इसी चिंता में डूबा रहता था।” अंत में मन को दृढ़ कर गांधी ने लंदन में रहने का निश्चय कर लिया।

डॉ. मेहता पुनः गांधी से मिलने आए और उन्हें अँग्रेजी शिष्टाचार और भाषा का ज्ञान कराने की दृष्टि से एंग्लो इंडियन परिवार के साथ रहने के लिए ले गए। इस परिवार में रहने पर भी उनकी भोजन की समस्या हल नहीं हुई। नमक, मिर्च, मसाले रहित सब्जी उनके गले से नीचे नहीं उतरती थी। घर की मालकिन सबेरे जलपान के लिए जई (जौ) का दलिया बनाती थी। उससे उनका पेट तो भर जाता था, पर तृप्ति नहीं होती थी। दोपहर और संध्या को मन का भोजन न मिलने से उन्हें भूखा ही रहना पड़ता था। उनके भारतीय मित्र मांस, मदिरा और सिगरेट का निःसंकोच सेवन करते थे। वे गांधी को मदिरा, सिगरेट आदि के लिए आग्रह तो न करते पर मांस खाने का प्रायः रोज ही आग्रह करते, क्योंकि उनका विश्वास था कि शीत प्रधान देश में मनुष्य बिना मांसाहार के स्वस्थ नहीं रह सकता। गांधी के पास इन सब शुभचिंतकों को शांत करने के लिए एक ही उत्तर था— “माँ के सामने मांस न खाने की प्रतिज्ञा करके आया हूँ; उसे किसी भी दशा में नहीं तोड़ सकता।” मित्र हार मान जाते पर उनकी दृढ़ता की बराबर प्रशंसा करते रहते।

गांधी अनुकूल शाकाहारी भोजनालय की खोज में प्रयत्नशील रहते थे। एक दिन उन्हें

फैरिंग्टन स्ट्रीट के शाकाहारी भोजनालय का पता लगा। उन्हें अपनी रुचि का भोजन मिल गया। वहाँ उन्हें शाकाहार के पक्ष का समर्थन करने वाली पुस्तक भी मिल गई। अभी तक तो माँ को दिए गए वचन पालन की दृष्टि से मांसाहार से कतराते थे, पर अब तो शाकाहार के पक्ष में तर्कपूर्ण प्रमाण प्राप्त हो गया। उन्हें विश्वास हो गया कि मांस भोजन अप्राकृतिक, पाशविक और अनैतिक है। उन्होंने शाकाहार पर अँग्रेज लेखकों की कई पुस्तकें पढ़ीं, जिनसे शाकाहार के पक्ष में उनका विश्वास दृढ़ हो गया और वे आजीवन उसका प्रचार करते रहे।

अनुकूल भोजन की समस्या तो हल हो गई। अब दूसरी समस्या थी अपने को इंग्लैण्ड की सभ्यता के अनुकूल ढालने की। धीरे-धीरे वे शिक्षित अँग्रेजों की भाँति अपना रहन-सहन बनाने लगे। सर्व प्रथम वेशभूषा में परिवर्तन ले आए। रेशमी टॉप हैट खरीदा, बढ़िया कोट सिलवाया, सोने की डबल वाच चेन ली, पेटेंट लेदर शू (अच्छे चमड़े के जूते) ले आए। मूँछ बढ़ा ली और सिर के बाल बाई ओर सँवारने लगे। टाई बाँधने की कला भी सीख ली। भारत में हजामत बनाने के दिन ही आइने में मुख देखते थे, पर यहाँ तो टाई ठीक करने में रोज आइने का काम पड़ने लगा। अँग्रेजी फैशन में रँगने की धुन सवार होने के कारण वे रह-रहकर दर्पण में अपना मुख देखते, यह जानने के लिए कि बाल ठीक तरह से सँवरे हैं या नहीं, टाई की गाँठ ठीक लगी है या नहीं। इसका परिणाम यह हुआ कि पोशाक पहनने में ही गांधी का बहुत समय व्यतीत होने लगा। सभ्य समाज में जाने पर बालों में हाथ फेरकर उन्हें ठीक करना भी वे न भूलते थे।

अँग्रेज बनने के लिए आधुनिक वेशभूषा पर्याप्त न थी; अँग्रेजी समाज में नृत्य-संगीत का ज्ञान भी आवश्यक समझा जाता है। इसलिए उन्होंने नृत्य की शिक्षा लेने का प्रयत्न किया। परन्तु उसमें उन्हें विशेष सफलता नहीं मिली। संगीतज्ञ बनने के लिए वायलिन बजाना भी

सीखा। इंग्लैण्ड के सभ्य समाज से संपर्क बढ़ाने के लिए फ्रेंच भाषा का ज्ञान आवश्यक था। गांधी ने इसे भी सीखने की कोशिश की।

गांधी अँग्रेजी बोलने का अभ्यास करते जाते थे, परन्तु धाराप्रवाह भाषण देने की क्षमता नहीं प्राप्त कर सके थे। इसकी शिक्षा लेने के लिए उन्होंने एक गुरु की शरण ली। उसे गिन्नी की दक्षिणा भी दी। उसकी सलाह से उन्होंने बेल द्वारा लिखित पुस्तक खरीदी।

गांधी के मन में पुनः संघर्ष हुआ। इस प्रसंग को उन्होंने विनोद की भाषा में लिखा है—“बेल साहब ने मेरे कान में बेल (घंटी) बजाई—अरे, अरे, तुझे इंग्लैण्ड में क्या जिंदगी बितानी है? लच्छेदार भाषण देकर क्या करेगा, नाच-गाकर कैसे सभ्य बनेगा? तुझे विद्या-धन का संग्रह करना चाहिए।” बेल ने गांधी के कान खड़े कर दिए। उन्होंने कानून का ज्ञान प्राप्त करने में अपना मन लगाना प्रारंभ कर दिया।

बैरिस्टर बनने के लिए इंग्लैण्ड में ‘ग्रे, लिंकन’, ‘मिडिल टेंपल’ और ‘इनर टेंपल’ नाम की चार शालाएँ थीं। इनमें किसी एक में नाम लिखाना होता था। गांधी ने इनर टेंपल में प्रवेश लिया। प्रवेश लेने के उपरांत वे दो बैरिस्टरों के समर्थन पर इस ‘सम्माननीय संस्था’ के सदस्य बने।

एक बार उनके एक घनिष्ठ मित्र ने उन्हें इंग्लैण्ड की सभ्यता से परिचित कराने की दृष्टि से थिएटर में ले जाने का प्रस्ताव किया। दिन निश्चित हो गया। थिएटर में जाने से पूर्व एक शानदार होटल में वे भोजन करने गए। ज्यों ही भोजन परोसने वाला भोजन की प्लेट लेकर आया त्यों ही गांधी ने पूछा कि उनमें कोई पदार्थ मांस का तो नहीं है? इस प्रश्न पर मित्र झल्ला उठा—“मोहन, यहाँ ऐसे सवाल नहीं चलेंगे। या तो चुपचाप जो सामने आए खाओ या बाहर चले जाओ।” गांधी चुपचाप बाहर चले गए। बाहर शीत बरस रही थी। बेचारा सिद्धांतवादी युवक काँपता, ठिठुरता, भूखा खड़ा रहा। मित्र

भोजन करके बाहर निकला और गांधी पूर्व निश्चय के अनुसार साथ थिएटर गए। दोनों पास-पास बैठे, पर दोनों एक दूसरे से एक शब्द भी नहीं बोले। गांधी की सहनशीलता का यह एक उदाहरण है।

गांधी तड़क-भड़क की जिंदगी से विरक्त होने लगे, अपने खर्च में कटौती करने लगे। पाई-पाई का हिसाब रखने लगे। यही कारण है कि सार्वजनिक जीवन में प्रविष्ट होने पर उन्होंने अर्थव्यवस्था पर सदैव ध्यान रखा। खर्च कम करने की दृष्टि से अब उन्होंने एंग्लो इंडियन परिवार से बिदा ली और एक छोटा-सा कमरा किराये पर ले लिया। यह कमरा काम के स्थान से दूर न था। उन्होंने बस से आना-जाना त्यागकर पैदल चलने का अभ्यास बढ़ाया। इससे बस का किराया बचने लगा। हाथ से भोजन बनाना प्रारंभ कर दिया, इससे होटल का खर्च बचने लगा। दस-पन्द्रह किलोमीटर पैदल चलने के कारण उनका स्वास्थ्य सुधरने लगा। सात्विक भोजन करने और संतुलित जीवन बिताने के कारण वे इंग्लैण्ड में कभी बीमार नहीं पड़े। खर्च में कमी करने का एक कारण यह भी था कि वे अपने बड़े भाई पर आर्थिक बोझ नहीं लादना चाहते थे। सादगी को उन्होंने अपने जीवन का लक्ष्य बना लिया।

प्राकृतिक चिकित्सा की ओर रुझान बढ़ने से उन्होंने अपने को अन्नाहार तक ही सीमित नहीं रखा; शाकाहारी संस्था के वे सदस्य बन चुके थे। उसके नियमों के अनुसार उन्होंने मिर्च-मसाले, मिठाई, चाय, कॉफी आदि का सेवन छोड़ दिया। उन्होंने यह अनुभव किया कि स्वाद जीभ से नहीं, मन से बनता है। इसलिए मन पर नियंत्रण रखना आवश्यक है।

भोजन का प्रश्न हल हो जाने पर गांधी ने अँग्रेजी में अपनी योग्यता बढ़ाने के लिए मैट्रिक की परीक्षा लंदन विश्वविद्यालय से उत्तीर्ण करने का निश्चय किया। उन्हें उसका पाठ्यक्रम काफी कठिन लगा। सबसे कठिन लेटिन भाषा लगी और उसमें पास होना अनिवार्य

था। वे इसी में अनुत्तीर्ण हो गए। दूसरे वर्ष पुनः परीक्षा दी और सब विषयों में सफल हो गए। लेटिन भाषा के अध्ययन से अँग्रेजी भाषा पर उनका सरलता से अधिकार हो गया। बाद में गांधी की अँग्रेजी इतनी अधिक परिष्कृत हो गई कि अँग्रेजी के विशेषज्ञ भी उनकी सरलता और सुष्ठुता पर आज भी मुग्ध थे।

गांधी के सात्विक जीवन का प्रभाव अँग्रेजों पर पड़ने लगा। उनके एक अँग्रेज मित्र ने जब उनसे गीता पढ़ाने का आग्रह किया, तो वे बड़े असमंजस में पड़ गए। उन्होंने मैट्रिक तक संस्कृत पढ़ी तो थी, पर उससे इतना ज्ञान नहीं हो पाया था कि वे किसी को मूल के आधार पर गीता पढ़ा सकें। उन्होंने अनुवाद के सहारे अँग्रेज मित्र को गीता का ज्ञान करा दिया।

गीता तो उन्होंने अँग्रेज मित्र को पढ़ाई और बाईबिल उससे पढ़ी। ईसाई धर्म के प्रति श्रद्धा तो जमी, पर हिन्दू धर्म के प्रति अश्रद्धा पैदा नहीं हुई। गांधी का अध्ययनक्रम निरंतर चलता रहा। कठिन परिश्रम के बाद 10 जून 1891 को वे बैरिस्टर घोषित हो गए। यह उल्लेखनीय बात है कि विदेश में भी स्वदेश के उनके संस्कार पूर्ववत् बने रहे। इंग्लैण्ड छोड़ने के पूर्व गांधी अपने ज्ञान तथा चरित्र की उज्ज्वलता की छाप प्रबुद्ध अँग्रेज समाज पर छोड़ आए।

लौटते समय जहाज की यात्रा बड़ी सुखद रही। वे जब 'डेक' पर घूमते और समुद्री हवा का आनंद लेते, तब उनकी सारी चिंताएँ तिरोहित हो जातीं। परन्तु जब वे अपने केबिन में रहते तो उनके सामने निराशा का चित्र खिंचने लगता। वे आत्म निरीक्षण करते— "कानून की परीक्षा तो मैंने पास कर ली है, परन्तु क्या मैं सचमुच कानून जानता हूँ। भारतीय कानून का ज्ञान तो मुझे जरा भी नहीं है। फिर मेरी बैरिस्टरी कैसे चलेगी?" इस प्रकार अपने गुण-दोषों की ओर झाँकने का गांधी जी का स्वभाव आजीवन बना रहा।

जहाज मुम्बई (बम्बई) की ओर बढ़ रहा था; आकाश में बादल घुमड़ते-घिरते आ रहे

थे। जब जहाज बंदरगाह पर लगा, वर्षा हो रही थी। गांधी भीगते हुए उतरे और सामने खड़े बड़े भाई लक्ष्मीदास के चरणों में झुक गए। लक्ष्मीदास उन्हें इंग्लैण्ड से हाल ही में लौटे डॉ. मेहता के घर ले गए। पर मोहन अपनी माँ से मिलने और घर जाने के लिए व्याकुल हो रहे थे। “माँ कितनी अधीरता से मेरी प्रतीक्षा कर रही होगी, पूछेगी मोन्या, तूने अपने वचनों का पालन किया है या नहीं। मैं कहूँगा, उन्हें पालने के कारण ही माँ मैं तेरे पास खुशी-खुशी आने की हिम्मत कर सका हूँ”— इन विचारों में डूबते-उतराते उन्होंने भाई से पूछा, “भाई, माँ कैसी हैं?” भाई चुप रह गए। उनकी आँखें भीग गईं। मोहन ने भाई की आँखों में पानी तो देखा, पर अपनी आँखें सूखी ही रखीं। गीता के परायण ने उन्हें स्थितप्रज्ञ होना सिखला दिया था। धीरे-धीरे भाई ने कहा—“तुम्हारी बैरिस्टरी पास होने का समाचार जब मिला, तब माँ मृत्युशैया पर थीं। सुनते ही उनकी आँखें चमक उठी थीं। पूछती थीं, “मोन्या कब आएगा? अगर उसका मुख देख सकती तो शांति से बिदा हो जाती। ऐसा लगता है कि मोन्या मुझे नहीं मिलेगा, भगवान मुझे जल्दी बुला रहा है। जब आ जाए तो उसे नासिक ले जाना और शुद्धि-संस्कार के बाद राजकोट के जाति बंधुओं को भोज देना मत भूलना।”

पढ़ाई में विघ्न होने के भय से भाई ने माँ की मृत्यु का समाचार मोहन को नहीं भेजा था। मोहन को पिता की मृत्यु से भी अधिक दुख माँ की मृत्यु से हुआ।

शतावधानी रायचंद भाई

डॉ. मेहता ने अपने संबंधी रायचंद भाई से मोहनदास का परिचय कराया। रायचंद भाई जवाहरातों का व्यापार करते थे। बड़े चरित्रवान, धर्मनिष्ठ और गजब की स्मरण शक्ति रखते थे। वे एक समय में सौ प्रकार की बातें सुनकर दुहरा सकते थे। ऐसे व्यक्ति शतावधानी कहलाते हैं। वे किसी भी भाषा के गद्य-पद्य को सुनकर ज्यों-का-त्यों सुना सकते थे, साथ ही शतरंज भी ठीक तरह से खेलते जाते थे और लोगों से बातें करते जाते थे। उनकी बुद्धि इतनी जागृत रहती थी कि कहीं कोई गलती नहीं हो पाती थी। कौतूहलवश गांधी ने उनकी परीक्षा लेनी चाही। उन्होंने अँग्रेजी के कई पारिभाषिक शब्द, मुहावरे और अन्य यूरोपीय भाषा के शब्द लिखकर सुनाए। सुनने के पश्चात् ही जिस क्रम में वे कहे गए थे, रायचंद भाई ने उसी क्रम से उन्हें दुहरा दिया। कहीं कोई भूल नहीं की। मुम्बई (बम्बई) के शिक्षित समाज के सामने वे अपनी शतावधानता के चमत्कार दिखा चुके थे। गांधी उनकी शतावधानता से कम, उनके पवित्र, धार्मिक आचरण से बहुत अधिक प्रभावित हुए। क्रोध तो उन्हें छू ही नहीं गया था। असत्य बोलना जानते ही न थे। सदा शांत मुद्रा में रहते, मानों जीवन मुक्त हों। गांधी उनकी आदर्शवादिता से बहुत अधिक प्रभावित हुए। जब कभी उनका मन आदर्श से डगमगाने लगता, तभी रायचंद भाई की प्रशान्त मूर्ति उनकी आँखों के सामने झूलने लगती और वे सँभल जाते, दृढ़ हो जाते।

अभ्यास

1. जहाज में यात्रा करते समय गांधी को रात्रि का समय क्यों अच्छा लगता था ?
2. किन-किन प्रमुख बंदरगाहों से होता हुआ जहाज मुम्बई (बम्बई) से लंदन पहुँचा ?
3. लंदन में गांधी ने माँ को दिए वचनों का पालन कैसे किया ?
4. अँग्रेजी सभ्यता में अपने को ढालने के पश्चात् किस घटना ने गांधी की भावना बदल दी ?
5. शतावधानी व्यक्ति कौन कहलाते हैं ?
6. गांधी रायचंद भाई के किन गुणों से प्रभावित हुए ?
7. ‘गांधी की लंदनयात्रा’ शीर्षक झलक से उनके जिन गुणों का परिचय आपको मिला हो, उन्हें लिखिए।